

अवच्छत् (Nir. 9, 8); कृद्, कृदति (= अर्चति Naigh. 3, 14), कृदयते, च-
च्छद्, कृत्सत् (Naigh. 2, 6), कृत्सि, अचकान्, अचकृत्सुम्. 1) *scheinen*,
dünken, für *Etwas* gelten: सोमस्येव मौनवतस्य भक्तो विभीर्दको जगत्वि-
र्मन्मचकान् RV. 10, 34, 1. तदिन्मे कृत्सद्वर्षो वर्षष्टरम् 32, 3. गोकामा मे
अच्छदप्यन्यदप्यम् 108, 10. 4, 163, 4. नहि मे अक्षिपञ्चनाच्छात्सुः पञ्च कृष्टयः
das Menschenvolk kam mir nicht einmal wie ein Staubkörnchen vor
10, 119, 6. 31, 4. 6, 49, 5. 7, 63, 3. 8, 1, 6. 3, 9, 7. (प्रजाः) सृष्टा अवला स्वा-
च्छदयन् Pāṇkat. Br. 14, 5. — 2) *gut scheinen*, *gefallen* Naigh. 2, 6. पञ्चि-
ह्नि ते गुणा इमे कृदयन्ति मयतेवे RV. 5, 79, 5. 1, 132, 6. संचक्ष्या मरुतश्च-
न्वर्षा अचकृत्स मे कृदयथा च नूनम् 103, 12. उतो तदस्मै मधिसचक्ष-
यात् 10, 73, 9. तेभ्य एष लोको ऽच्छदयत् Cat. Br. 3, 3, 4, 2. 5, 4, 2. यद-
स्मा अचक्षदपस्तस्माच्छदसि 3, 1. mit dem acc. der Person: कामात्मकां-
प्रच्छदति कर्मयोगः MBh. 12, 7379; vgl. jedoch 7376. — 3) *med. sich*
gefallen lassen, *Gefallen finden an* (acc. und loc.): पौरे कृदयसे क्वम् Vi-
lakṣ. 2, 5. किर्यासु स्वर्पतिश्चन्दयते RV. 10, 27, 8. — 4) *kृदयति* (Jmd
mit *Etwas* gefällig machen, *befriedigen*) Jmd *Etwas* anbieten; mit dem
acc. (selten gen.) der Person und instr. der Sache: सीतां मातेन च्छदयन्
R. 2, 97, 1. नुधितप्रक्ष्यमानो ऽपि भोजनं नाभ्यनन्दत MBh. 12, 6816. 13,
4542. राज्यं देव्ययज्ञायां एवमुक्ता द्विर्ज्येष्ठे कृदयामास Bhāg. P. 9, 22,
15. कृदयामास तान्कामैः 4, 17, 1. MBh. 1, 6365. अनया कृदयमानः — तैस्ते-
रतिथिस्तकारैः 13, 148. अन्यैरितिः 138. Uebersaus häufig in der Ver-
bindung mit वरेणा 1, 2166. 7635. 7733. 2, 1138. 13, 220. 2341. 2709. Ha-
riv. 240. 751. 7157. R. 6, 4, 42. Bhāg. P. 7, 16, 7. वरेणा च्छदयताम् MBh.
9, 3017. 12, 1096. वरेप्रच्छन्दितस्तेन 13, 7191. वरेणा च्छन्दितो देवैर्नद्रा-
मेव गृहीतवान् Hariv. 6465. Mit dem gen. der Person: वरेणा च्छदया-
मि ते R. 3, 3, 15. न च्छदयामि ते MBh. 12, 7275.

— अव *begehren*, *erstreben*: इष्टं त्वनिष्टं च सुखामुखं च साशीस्त्ववच्छ-
न्दति कर्मभिश्च MBh. 12, 7378.

— उप *caus.* 1) Jmd (acc.) *Etwas* (instr.) *anbieten*: तस्मादुपच्छदयति प्र-
योष्यं मयि त्वया न प्रतिषेधैत्यम् Ragh. 5, 58. im Prākṛit: तुष्टं अश्वं दाव-
पठमं पित्रोऽपि अणुकम्पिणा उवच्छन्दितो उग्रश्रेया (d. i. उदकेन) Cāṭ. 68,
9. — 2) Jmd (acc.) *zureden*, *zu verführen suchen*: देवताभिरुपच्छन्द्यते ।
भो इहोपविश्यताम् u. s. w. Prabh. 101, 10. हतैरकूतशंसिभिः । तामुपच्छ-
न्दयन्तो ऽथ मुन्दरीमुदवेजयन् Rāṅga-Tar. 1, 254. 6, 141. परदारानुपच्छन्द-
यति (als Erkl. von उपवदते) P. 1, 3, 47, Sch. — Vgl. उपच्छन्द.

— वि *caus.* *die Achtung erwidern* Vjurr. 151.

— सम् *caus.* Jmd (acc.) *Etwas* (instr.) *anbieten*: एवं संकृदयमानस्तु वरेणा
कुरिणा MBh. 3, 13507. 12, 685.

3. कृद्, कृदति *nähren*, *kräftigen* (ऊर्जने) Dhātup. 19, 52.

4. कृद्, कृदति und कृदयति *anzünden* (संदोषन) Dhātup. 34, 14, v. l.
für कृद्.

5. कृद् *adj.* am Ende eines comp. P. 6, 4, 97 (von 1. कृद्). = 1. und 2.
कृद्; vgl. कविच्छद्, धाम°, प्रथम°. मल्लिका° H. an. 4, 2 zur Erklärung
von अश्मत्तक; st. dessen मल्लिकाच्छदन Med. k. 175.

कृद् (von 1. कृद्) m. Trik. 3, 5, 3. 1) *Decke*, *Bedeckung*: अल्पच्छद् *noth-*
dürftig bekleidet Māṇu. 15, 19. कृतौकसो ऽमरा धनच्छदाः *in Wolken*
gehüllt Bhāg. P. 7, 8, 27. Vgl. उत्तरच्छद्, उग्रच्छद्, तनुच्छद्, दसच्छद्, व-
दनच्छद्. — 2) *Flügel* AK. 2, 5, 36. Trik. 3, 3, 206. H. 1318. an. 2, 226.

Med. d. 5. N. 9, 12. — 3) *Blatt* AK. 2, 4, 14. Trik. H. 1123 (n.). H. an.
Med. MBh. 3, 8359. Arā. 4, 50. R. 2, 55, 6. 5, 16, 37. 43. Pāṇkat. II, 2. Prabh.
79, 17. Bhāg. P. 4, 6, 28. Am Ende eines adj. comp. f. घ्रा MBh. 2, 1809.
R. 3, 59, 21. Vgl. अयुक्च्छद्, अस्त्रविन्दुच्छदा, घ्रापतच्छदा, करच्छद्, कर्क-
शच्छद् u. s. w. — 4) N. zweier Pflanzen: a) = ग्रन्थिपर्णा. — b) = त-
माल H. an. Med. — Vgl. उग्रच्छद्.

कृदन (wie eben) n. 1) *Decke*, *Bedeckung* H. 1477. Med. n. 65. Hariv.
12671. मल्लिका° Med. k. 175. (शाला) वृत्तपर्णाच्छदना R. 2, 56, 32. — 2)
Flügel H. an. 3, 375. Med. n. 65. MBh. 3, 11595. — 3) *Blatt* AK. 2, 4,
4, 14. H. 1123. H. an. Med. (lies: कृदने). Suṣṇ. 1, 303, 16. 2, 501, 14. —
4) *das Blatt der Laurus. Cassia Ltn.* (तमालपत्र) Rāṅga. im ÇKDn. —
Vgl. कृदन.

कृदपत्र (कृद् + पत्र) m. Birke Ratnam. im ÇKDn.

कृदि 1) = कृदिस् *Verdeck eines Wagens*: पानेभ्यनत्तच्छदि Bhāg. P.
3, 21, 18. Burnouf: *qui a des lames sans nombre*. — 2) *Flügel* (?); vgl.
काकच्छदि.

कृदिस् (von 1. कृद्) Uṇ. 2, 104. P. 3, 4, 97. n. (f. Siddh. K. 250, b, 1)
Decke, *Verdeck eines Wagens*; *Dach* Naigh. 3, 4 (= गृह). AK. 2, 2, 14. 3,
4, 20, 203. H. 1010. मनो अस्या अन्नं आसीद्वैरासीडुत च्छदि: RV. 10, 83,
10. AV. 3, 7, 3. VS. 5, 28. TS. 6, 2, 9, 4. 10, 5, 7. तृतीयं कृदिर्धिनिधीयते
Ait. Br. 1, 29. Çat. Br. 3, 5, 3, 9. 23. 6, 4, 22. Lāṭj. 1, 2, 22. 3, 5, 20. (गृहम्)
कृदिषा कृदिम् Kathās. 2, 49. व्यापमात्मा नभश्छदि: Bhāg. P. 7, 14, 13.
Burnouf: *qui remplit le ciel*. — Vgl. कृदिषेय.

कृम् in der Stelle: एषा घोरतमा संध्या लोकच्छम्दूरी Bhāg. P. 3, 18,
26. Burnouf: *cette heure terrible ou périssent les hommes*. Wohl = कृ-
म्बद्.

कृम्न (von 1. कृद्) n. Uṇ. 4, 146. P. 6, 4, 97. Vop. 20, 70. 1) *Dach*: दि-
वच्छम्नासीति च्छम्नादते Ācṣ. Gṛh. 3, 8. Lāṭj. 1, 7, 13. — 2) *eine ange-*
nommene äussere Hülle, *ein trügerisches Gewand*, *eine angenommene*
Gestalt; *trügerischer Schein*, *Betrug*, *Hinterlist*, *Verstellung* AK. 1, 1,
3, 30. H. 378. = शाब्द, अपदेश und घातिकर्मन् H. an. 2, 264. = व्याज
und अपदेश Med. n. 64. अनेन च्छम्ना भन्ने स्वयं त्वा इष्टमागतः *in jener*
angenenommenen Gestalt R. 3, 53, 28. 49, 22. (प्रपितामहः) हिनस्ति भूतैर्भू-
तानि च्छम्न कृत्वा MBh. 3, 1152. कृम्नोपेत्य 1, 1989. शक्रो ब्राह्मणच्छम्न-
ना वृत्तः 3, 16944. ब्राह्मणच्छम्नसंवृत 2, 838. ब्राह्मणच्छम्नाभ्येत्य तामि-
न्द्रो ऽथान्वपृच्छत् 13, 559. R. 3, 52, 4. पलितच्छम्ना (जरा) Ragh. 12, 2.
कृत्वा यो ब्राह्मणच्छम्न भित्तार्थो समुपागतः MBh. 15, 1068. नागेषु तापस-
च्छम्नत्रयिषु MBh. 1, 1792. 3, 415. विष्णुं राममहं मन्ये मानुषं कृम्नत्रयिणम्
(wohl मानुषच्छम्न° zu lesen) R. 6, 11, 32. धर्मच्छम्नवृत्तं शठम् 4, 16, 16. दो-
दृच्छम्ना Megh. 76. तपच्छम्नस्थिते ऽधमे Pāṇkat. III, 93. किमिह च्छ-
म्ना MBh. 2, 843. कृम्नाकाम 12, 3092. कृम्ना चरितं पञ्च व्रतम् M. 4, 199.
कृम्ना घोषपादिताम् (कन्याम्) 9, 72. कृम्ना निर्जितास्ते MBh. 3, 14827.
Pāṇkat. 198, 16. शक्राश्च वर्वराश्चैव अत्रपच्छम्नपूर्वकम् MBh. 2, 1088. कृम्न-
मृत 1, 146. कृम्नधर्मपरिच्छन् R. 4, 16, 21. कृम्नापस *ein heuchelnder*
Frommer Trik. 2, 7, 13. Çabdar. im ÇKDn. — Vgl. कूरच्छम्न.

कृम्नवेशिन् (कृम्न + वेश) m. *ein verkleideter Mann*, *Gauner* Wils.
कृम्निका (von कृम्न्) f. *Cocculus cordifolius* DC. (s. गुडची) Rāṅga.
im ÇKDn.